प्रो० दिनेश चन्द्र श्रीवास्तव
निदेशक
दीनदयाल शोध केन्द्र

डॉ० मानस उपाध्याय
सह निदेशक
दीनदयाल शोध केन्द्र

डॉ० श्रवण कुमार द्विवेदी
सहायक आचार्य

श्री संगम बाजपेयी
सहायक आचार्य

श्री स्वयं प्रकाश अवस्थी
सहायक आचार्य

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University Campus, Kanpur-208024
Contact: Email: ddsk.csjmu@gmail.com

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

(पूर्ववर्ती कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर)

दीनदयाल शोध केन्द्र

सूचना विवरणिका

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु , मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥

भारतीय वैदिक ज्ञान परम्परा की अमूल्य निधि वेद वेदांग उपनिषद् पुराणादि की अविरल निर्मल धारा जो अक्षुण्ण है, इस ज्ञान गंगा की एक धारा छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय के दीनदयाल शोध केन्द्र से माननीय कुलपति प्रो० विनय कुमार पाठक जी के संरक्षण में तथा दीनदयाल शोध केन्द्र के निदेशक प्रो० दिनेश चन्द्र श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में प्रवाहित हो रही है। वेद के दो भाग ऋषियों ने बताए हैं - ज्ञानकाण्ड तथा कर्मकाण्ड।

कर्मकाण्ड का उद्देश्य याज्ञिक विधानों, संस्कारों तथा जीवन के नित्य एवं नैमित्तिक कर्मों, तर्पण, श्राद्ध आदि का ज्ञान कराना है। साथ ही, यह बताता है कि इनका व्यवहार में किस प्रकार पालन करके जीवन को सफल, संस्कारित एवं परिमार्जित बनाया जा सकता है तथा आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग को प्रशस्त किया जा सकता है।

वैदिक ज्ञान गंगा में शास्त्र का अवगाहन करने के लिए जीवन संयमित होना चाहिये। जीवन संयमित होने के लिए कर्मकाण्ड अनिवार्य है। जीवन को दिशा देने के लिए ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस ज्ञान परम्परा से समाज, देश का उत्थान होगा, समाज सुसंस्कृत होगा। भारतीय ज्ञान की ध्वजा सकल विश्व में समुन्नत हो फहराए, यही मंगल उद्देश्य है।
दीनदयाल शोध केन्द्र के अन्तर्गत प्राच्य विद्या, संस्कृत शास्त्र की अमूल्य निधि समेटे हुए शास्त्रों का अध्ययन अध्यापन होता है। जिसमें प्रमुख पाठ्यक्रम निम्न हैं -

क.सं.	कोर्स	अवधि	सीट	योग्यता	फीस (एक वर्ष)
1	एम0ए0 ज्योर्तिविज्ञान	2 वर्ष	50	स्नातक	10,200/-
2	डिप्लोमा इन कर्मकाण्ड	1 वर्ष	50	इण्टर	9,200/-
3	पी0जी0 डिप्लोमा इन वास्तुशास्त्र	1 वर्ष	30	स्नातक	11,200/-

ज्योतिर्विज्ञान (ज्योतिषामयनम चक्षुः)
वैदिक ज्ञान में षडंगवेद अर्थात् वेद और वेदों के छः अंग के साथ अध्ययन करने की परम्परा रही है। वेद को जानने समझने के लिए वेदांगों का अध्ययन अनिवार्य है। ज्योतिष शास्त्र वेद पुरुष के नेत्र हैं। इनमें भूत, वर्तमान, भविष्य को देखा जा सकता है।

कर्मकाण्ड (तत्सद्)
वेदों में प्रधानतः तीन विषयों, कर्मकाण्ड, ज्ञानकाण्ड, उपासनाकाण्ड का प्रतिपादन है। यज्ञ-यागादि, यथेष्ठ फलप्राप्ति, लोक हितकारी दृष्ट फल, सभी कर्मों का समावेश कर्मकाण्ड के अन्तर्गत आता है। कर्मकाण्ड अर्थात् यज्ञकर्म वह है जिससे यजमान को इहलोक में अभीष्ट फल की प्राप्ति हो। धर्मसूत्र एवं स्मृतियाँ जीवन के प्रत्येक पक्ष में विधि-निषेध का उपदेश करती हैं तथा कर्मकाण्ड से नित्य, नैमित्तिक, काम्यकर्मों को उपस्थापित करते है।

वास्तु शास्त्र (यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे)
भारतीय प्राचीन ज्ञान वास्तु के क्षेत्र में अद्भुत रहा है। पुरातन से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महत्व समान रहा है। वास्तुकला, भूगोल, खगोलशास्त्र और तत्वों के संतुलन पर आधारित है। जिस प्रकार मानव शरीर में पांच तत्वों का सन्तुलन है। उसी प्रकार वास्तुशास्त्र गृह, भवन, प्रतिष्ठान, द्वार में सन्तुलन होने का उपदेश करता है। सभी तत्वों की दिशा, स्थान, आदि का महत्व है। इससे ऊर्जा का संचार होता है और जीवन सुगम, सरल, तथा उत्कर्ष को प्राप्त करता है।

सम्पर्क सूत्र

डॉ० श्रवण कुमार द्विवेदी, कर्मकाण्ड (9959242886)
श्री संगम बाजपेयी, कर्मकाण्ड एवं प्रवेश समन्वयक (8887878840)

Email :ddsk@csjmu.ac.in

Email: ddsk.csjmu@gmail.com